NOTES

एहतियातन बुझा-सा रहता हूँ
जलता रहता तो राख हो जाता!

वरक-वरक की तरह उड़ गई हवाओं में
कोई किताब न बन पाई ज़िन्दगी मेरी।

मंज़िलें तो रुख बदलती हैं मगर
रास्ते हैं हम यहीं रह जायेंगे।

कैसे महकेंगी किताबें आने वाले वक्त में
अब हमें फूलों का मौसम जा रहा है छोड़कर।

ग़मों से किस तरह कहूँ कि जाओ
ये मेरे हमनशीं हैं मुद्दतों से।

ये सच है मुसीबत में बदल जाती हैं आँखें
अपनों को मगर गैर कभी समझा नहीं करते।

खामोशी बज़्म का दस्तूर हुई जाती है
कह कोई बात कि हंगामा खड़े अभी।

अब आप आ गए हैं तो आता नहीं याद
वरना हमें आपसे कुछ कहना ज़रूर था।

अब के हम बिछड़े तो शायद कभी ख्वाबों में मिलें
जिस तरह सूखे हुए फूल किताबों में मिलें।

दुश्मनों के साथ मेरे दोस्त भी आज़ाद हैं
देखना है फेंकता है मुझपे पहला तीर कौन।